Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 06 भाग 01, (जुन 2026)
पृष्ठ संख्या 28–30

सूकर पालनः भूमिहीन एवं कमजोर जोत वाले किसानों के लिए रोजगार और आर्थिक आत्मनिर्भरता का सुनहरा अवसर

डॉ. करुणेश कुमार दूबे[1], डब्लू सिंह[2], डॉ. आशीष नाथ[3] एवं डॉ. आनन्द सिंह[4]

[1]सहायक प्राध्यापक, [2]छात्र, बी एस सी ऑनर्स एग्रीकल्चर,
[1,2]श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश
[3]सहायक प्राध्यापक, महर्षि स्कूल ऑफ साइंस और ह्यूमैनिटीज
महर्षि यूनिवर्सिटी का इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी लखनऊ, कैंपस
[4]सहायक प्राध्यापक, मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर, मध्य प्रदेश, भारत।

Email Id: -00anandsingh92@gmail.com

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ बढ़ती जनसंख्या और सीमित कृषि भूमि के कारण केवल फसल उत्पादन पर निर्भर रहना किसानों के लिए पर्याप्त नहीं रह गया है। ऐसी स्थिति में पशुपालन आधारित व्यवसाय किसानों की आय बढ़ाने का प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण व्यवसाय सूकर पालन है।

सूकर पालन कम लागत, कम स्थान और कम समय में अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय है, जो विशेष रूप से भूमिहीन, सीमांत एवं कमजोर जोत वाले किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। सूअर विभिन्न प्रकार के जैविक अपशिष्ट पदार्थों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीनयुक्त मांस में परिवर्तित करने की क्षमता रखते हैं, इसलिए इन्हें "वेस्ट कनवर्टर" भी कहा जाता है।

सूकर पालन से न केवल रोजगार एवं अतिरिक्त आय प्राप्त होती है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण स्तर और आर्थिक आत्मनिर्भरता को भी बढ़ावा मिलता है।

सूकर पालन का वैश्विक एवं भारतीय परिदृश्य

विश्व में स्थितिः विश्व स्तर पर सूकर पालन एक विशाल व्यवसायिक उद्योग के रूप में विकसित हो चुका है। वर्तमान में चीन विश्व का सबसे बड़ा सूअर उत्पादक देश है, जो वैश्विक उत्पादन का लगभग 50: हिस्सा अकेले करता है। इसके बाद यूरोपीय संघ (विशेषकर स्पेन और जर्मनी), संयुक्त राज्य अमेरिका तथा ब्राजील का स्थान आता है। खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के अनुसार विश्व में सूअर के मांस का उपभोग अन्य मांस की तुलना में अधिक होता है। वर्ष 2018 में प्रति व्यक्ति सूअर मांस की खपत लगभग 15.9 किलोग्राम दर्ज की गई थी।

भारत में स्थितिः भारत में सूकर पालन मुख्यतः ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों तक सीमित रहा है, परंतु वर्तमान समय में यह रोजगार और स्वरोजगार का महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है। 20वीं पशुगणना के अनुसार भारत में सूकरों की कुल संख्या लगभग 9.6 मिलियन थी। सूकर पालन में प्रमुख राज्य असम, झारखंड, मेघालय और पश्चिम बंगाल हैं। पूर्वोत्तर भारत में सूअर के मांस की मांग अधिक पाई जाती है। भारत के कुल मांस उत्पादन में सूअर के मांस का योगदान लगभग 3.65 प्रतिशत है। वर्तमान में मांग और आपूर्ति के बीच लगभग 50

प्रतिशत का अंतर है, जो नए उद्यमियों के लिए बड़े अवसर प्रदान करता है।

सूकर पालन का महत्व

1. आर्थिक महत्वः

- कम लागत में अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय
- भूमिहीन एवं सीमांत किसानों के लिए रोजगार का साधन
- कम समय में तेज उत्पादन एवं आय
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करना

2. पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी महत्व : सूअर के मांस में लगभग 18–20 प्रतिशत प्रोटीन तथा 5–10 प्रतिशत वसा पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें आयरन, जिंक, फोलिक एसिड, विटामिन B12 तथा थायमिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करने, मांसपेशियों की वृद्धि तथा रक्त निर्माण में सहायक होता है।

3. सामाजिक महत्व : सूकर पालन ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब एवं भूमिहीन परिवारों को रोजगार प्रदान करता है। इसमें महिलाओं और युवाओं की भागीदारी भी अधिक होती है, जिससे सामाजिक सम्मान, आत्मनिर्भरता तथा जीवन स्तर में सुधार होता है।

सूकरों की प्रमुख नस्लें

भारत में लगभग 15 पंजीकृत नस्लें पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ विदेशी नस्लें भी प्रचलित हैं, जैसेकृ

- लार्ज व्हाइट यॉर्कशायर
- मिडिल व्हाइट यॉर्कशायर
- बर्कशायर
- टैमवर्थ
- लैंड्रेस
- हैम्पशायर

इन नस्लों में लैंड्रेस नस्ल मांस उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है।

सूकरों की विशेषताएँ

- सूअर सर्वाहारी होते हैं।
- एक वयस्क सूअर प्रतिदिन लगभग 22–25 लीटर पानी पीता है।
- प्रतिदिन 3–5 किलोग्राम गोबर उत्पन्न करता है।
- अन्य पशुओं की तुलना में इनमें 44 दाँत पाए जाते हैं।
- गर्भकाल केवल 114 दिन का होता है।
- एक बार में 8–14 बच्चों को जन्म देने की क्षमता।
- वर्ष में लगभग दो बार बच्चे देने की क्षमता।

इनकी उच्च प्रजनन क्षमता के कारण यह व्यवसाय तेजी से विस्तार प्राप्त करता है।

सूकर पालन की प्रमुख पालन विधियाँ

1. गहन पालन विधि : इस विधि में सूकरों को सीमित स्थान में वैज्ञानिक तरीके से पाला जाता है। संतुलित आहार, स्वास्थ्य प्रबंधन और नियमित देखभाल पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

2. अर्ध–गहन पालन विधि : इसमें सूकरों को कुछ समय खुले क्षेत्र में तथा कुछ समय शेड में रखा जाता है। यह विधि कम लागत और बेहतर उत्पादन के लिए उपयोगी मानी जाती है।

3. पिछवाड़ा पालन विधि : इस विधि में घर के आसपास छोटे स्तर पर सूकर पालन किया जाता है। इसमें कम पूंजी लगती है तथा घरेलू अवशेषों का उपयोग किया जा सकता है। यह ग्रामीण एवं भूमिहीन परिवारों के लिए उपयुक्त है।

4. मुक्त चराई पालन विधि : इस विधि में सूकर खुले क्षेत्र में चरते हैं और प्राकृतिक रूप से

भोजन प्राप्त करते हैं। इसमें प्रबंधन लागत कम होती है।

आहार एवं पोषण प्रबंधन

सूकरों को संतुलित आहार देना अत्यंत आवश्यक है। इनके आहार में निम्न शामिल होने चाहिएकृ

- दाना एवं अनाज
- हरा चारा
- खनिज मिश्रण
- स्वच्छ एवं पर्याप्त पानी

संतुलित आहार से वृद्धि दर, प्रजनन क्षमता तथा मांस उत्पादन में वृद्धि होती है।

प्रजनन एवं बच्चों की देखभाल

प्रजनन प्रबंधन : सूअर का औसत गर्भकाल 114–115 दिन का होता है, जिसे "3 महीने, 3 सप्ताह और 3 दिन" के नियम से याद रखा जाता है। गर्भित मादा को शांत वातावरण, पौष्टिक आहार और स्वच्छ पानी देना आवश्यक होता है।

नवजात बच्चों की देखभाल :

- प्रसव स्थान को स्वच्छ रखना
- बच्चों को ठंड से बचाना
- जन्म के तुरंत बाद शरीर साफ करना
- माँ का पहला दूध (कोलोस्ट्रम) पिलाना
- आयरन एवं आवश्यक दवाइयाँ समय पर देना
- संक्रमण से सुरक्षा करना

सूकर पालन में सावधानियाँ

सूकर पालन प्रारंभ करने से पहले निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- उपयुक्त स्थान का चयन
- अच्छी नस्लों का चुनाव
- स्वच्छ एवं हवादार शेड की व्यवस्था
- नियमित टीकाकरण एवं स्वास्थ्य परीक्षण
- बाजार की मांग एवं लागत का अध्ययन
- प्रशिक्षण प्राप्त करना

स्वाइन फीवर जैसी बीमारियाँ सूकर पालन में अत्यंत खतरनाक होती हैं, इसलिए रोग नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

सूकर पालन में चुनौतियाँ

1. रोग एवं स्वास्थ्य समस्याएँ

- स्वाइन फीवर जैसे संक्रामक रोग
- टीकाकरण की कमी
- परजीवी एवं संक्रमण की समस्या

2. पोषण संबंधी समस्याएँ

- संतुलित आहार की कमी
- चारे एवं अनाज की बढ़ती कीमतें

3. प्रजनन संबंधी समस्याएँ

- नवजात बच्चों की अधिक मृत्यु दर
- अच्छी नस्लों की कमी

4. आर्थिक समस्याएँ

- प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता
- दवाइयों एवं उपचार का बढ़ता खर्च
- बाजार मूल्य में उतार–चढ़ाव

निष्कर्ष

सूकर पालन ग्रामीण भारत में रोजगार, पोषण और आर्थिक विकास का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रहा है। कम लागत, तेज प्रजनन क्षमता और अधिक लाभ के कारण यह भूमिहीन एवं सीमांत किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी व्यवसाय सिद्ध हो सकता है। यदि वैज्ञानिक तरीके से संतुलित आहार, स्वास्थ्य प्रबंधन एवं उचित प्रशिक्षण के साथ सूकर पालन किया जाए, तो यह किसानों की आय बढ़ाने के साथ–साथ ग्रामीण आत्मनिर्भरता और पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।